IJRAR.ORG E-ISSN: 2348-1269, P-ISSN: 2349-5138

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS (IJRAR) | IJRAR.ORG

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

यहुदी, बाईबिल और कुरान में समतत्त्वः भगवद्गीता के संदर्भ में

Dr. Rajiv Ranjan Pandey, Assistant Professor, PHILOSOPHY,

R.B.G.R. College, Maharajganj, Siwan, J. P. University, Chhapra

यहुदी एवं भगवद्गीता में समतत्त्व

* सर्वोच्च सत्ता परमेश्वर अविनाशी है। (गीता, 2:17, निर्गमन, 20:2, उत्पत्ति 17:1, 17:5, 17:15) * जो पुरूष सम्पूर्ण कामनाओं को त्यागकर ममतारहित, अहम्रहित एवं स्पृहारहित विचरता है, वहीं परमेश्वर को प्राप्त करता है। (गीता, 2:71, निर्गमन, 24:18, 34:28, उत्पत्ति, 3:3–24, 49:4) * परमेश्वर विश्वास में संशय होते ही साधक पथभ्रष्ट हो जाता है। (गीता, 4:40, उत्पत्ति, 3:3–24, शमुएल–II, 12:9–13) * परमेश्वर भक्तो के 'योगक्षेम' का वहन करते है। (गीता 9:22, निर्गमन, 15:25, 16:23–36) * परमेश्वर का भक्त नष्ट नहीं होता। (गीता, 9:31, उत्पति, 8:1–19) * परमेश्वर के राज्य में वर्ण , जाति आदि का भेदभाव नहीं। (गीता, 9:13, निर्गमन, 13:30–42, 13:1–2) * पीड़ीत, रोगी एवं जरूरतमंद की सेवा परमेश्वर की सेवा, परमेश्वर के लिए (गीता, 12:4, 17:20, व्यवस्थापिका 10:18, निर्गमन 22:22) * शैतान इब्लीस (माया) के कारण जीव परमार्थ से भटक जाता है। (गीता, 7:14, उत्पति, 3:3–24) * व्यभिचार, लुच्चापान, घिनौना कृत्य, अंधमूर्ति पूजा, टोना, बैर झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध, विरोध, फूट, डाह, मतवालापन, कामक्रीड़ा आदि अशुभ कर्म है, तथा भाईचारा, प्रेम, आनंद, मेल, धैर्य, भलाई, विश्वास, नम्रता, संयम, प्रार्थना आदि शुभ कर्म है। (गीता, 12:1–4, उत्पत्ति 35:2, निर्गमन 32:19–20, 33:6–8 व्यवस्थापिका 10:18, निर्गमन, 21:16–17, 22:18) * जैसी करनी, वैसी भरनी। (गीता, 18:61, नीतिवचन, 12:14) * साधुओं की रक्षा, दुष्टों का विनाश, धर्म की स्थापना परमेश्वर का संकल्प। (गीता, 4:7–8, उत्पत्ति 8:1–19) * ईश्वर ने दिया, ईश्वर ने लिया, उसकी मर्जी, उसकी स्तुति हो। (गीता, 18:61, अय्यूब 1:21–22) * परमेश्वर स्वयं की स्वयं को जानता है। (निर्गमन 3:14, गीता 10:2–3, 10:48, 15:15) * खाना–पीना, देश–काल एवं परिस्थिति से उत्पन्न धर्म है, जो चीजें सस्ते, सरल, सहल, सुपाच्च एवं रूचिकर रूप से मिलते है, जहाँ अभाव न हो, वहीं खाना–पीना धर्म है। {यथार्थ गीता, पृ0 (320–21), उत्पत्ति 1:24–31} * मन–मुख एक करके प्रार्थना, गिड़गिड़ाहट, चीख, व्याकुलता समर्पण के साथ करो। (गीता 12:8, निर्गमन, 13:1–2, गिनती 18:15–17)

* आत्मा अविनाशी है। (गीता, 2:17, 2:19–20 मत्ती:10:34–39, 12:48–50) * जो पुरूष सम्पूर्ण कामनाओं को त्यागकर, ममतारहित, अहम्रहित और स्पृहारहित विचरता है, वहीं परमेश्वर को प्राप्त करता है। (गीता, 2:71, 2:55–73, मत्ती: 14:31, 4:5–7) * परमेश्वर, 'योगक्षेम' का वहन करता है। (गीता, 9:22, लुक:12:27–29, 12:7) * परमेश्वर का भक्त नष्ट नहीं होता। (गीता, 9:31, मत्ती: 14:31–32, कुरिंथओं: 4:8–9) * परमेश्वर के राज्य में वर्ण, जाति आदि का भेदभाव नहीं। (गीता 9:12, इफिसियों : 2:11–18) * परमेश्वर के राज्य में पापी, दुष्ट, स्त्री, वैश्य, शुद्र एवं चाण्डाल आदि सब अधिकारी हैं, बशर्ते कि वह सच्चे दिल से शरणागति ग्रहण करें। (गीता, 9:30–32, मत्ती, 21:31, मरकुस 2:17) * शैतान इबलीस (माया) के कारण जीव परमार्थपथ से भटक जाता है। (गीता 7:14,उत्पत्ति 3:3–24) * गुप्त दान, प्रार्थना का फल श्रेयस्कर है, सब प्रकार से परमेश्वर की शरण लो, परमेश्वर पर विश्वास रखो, वह तुम्हें मुक्ति प्रदान करेगा। (गीता 18:61, 12:1–20, 2:55–72, 14:22–26, मत्ती 6:3–4) * पीड़ीत रोगी एवं जरूरतमंद की सेवा, परमेश्वर के लिए। (गीता, 12:4, 17:20, मत्ती:20:28, 25:34–40) * जैसी करनी, वैसी भरनी (भगवद्गीता 18/16, मत्ती: 7:2) * महापुरूष का संग ही सच्चा उपवास है। (गीता, 4:34, 9:15) * हमें उतना ही भोजन दो, जितना कि आवश्यकता हैं। (गीता, 6/17, मत्ती 6:10–13) * व्यभिचार, गंदे काम, लुच्चापन, अंधमोह, मूर्तिपूजा, टोना, बैर, झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध, विरोध, फूट, विधर्म, डाह, मतवालापन, कामक्रीड़ा आदि अशुभ कर्म है तथा प्रेम, आनंद, भाईचारा, मेल, धैर्य, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, संयम, प्रार्थना आदि शुभ कर्म है। (थिस्सलुनीकियों :5:19–23, 16/1–24, गीता 12:1–4) * साधुओं की रक्षा एवं दुष्टों का विनाश एवं धर्म की स्थापना, परमेश्वर का संकल्प। (गीता 4:7–8, मत्ती : 13:41–43, लुक 6:37, 12:12–14, योहन्ना 10:18) * साधारणतः मनुष्य बेवजह कष्ट नहीं चाहता, तो दूसरों के प्रति वैसा ही सोचे। (गीता, 13/7, मत्ती 7:12) * परमेश्वर के साथ सगुण सम्बंध सत्य है, जैसे–पिता–पुत्र सम्बंध। (गीता, 12:1–20, मत्ती :17:1–16) * आत्मसंयम परमेश्वर के सन्निकट है। (गीता, 2:68, मत्ती 18:7, मरकुस 20:15) * परमेश्वर ने जो दिया, जो लिया, उसकी मर्जी (गीता, 18/16, मत्ती 20:15) * तु सम्पूर्ण हृदय, बुद्धि एवं जीवन से परमेश्वर की शरण मे जा। (मत्ती, 22:37–38, गीता 18/65–66, रोमियों 15/6) * बिना साधना के नबी को कोई पहचान न सकेगा। (मत्ती, 25:13, गीता, 4/6, 7/25) * निकम्मे को बाहर निकाल दो, पुरूषार्थी को पुरस्कार दो। (मत्ती, 25:30, गीता 17/22) * ईश्वर ने दिया, लिया, उसकी स्तुति हो। (अय्यूब 1:21, गीता सार) * परमेश्वर स्वयं ही स्वयं को जानता है। (निर्गमन 3:14, गीता 10/2–3, 10/48, 15/15) * दीन हीन, अंकिन्चित, विनम्र, सरल, दक्ष, चतुर, अस्तेयी, अपरिग्रही, प्रेम, दया, क्षमा, मैत्री, सहनशील, संतुष्ट, अनिकेत, अहिंसक, करूण, शांत, राग–द्वेष रहित आदि गुण भक्त के लक्षण है। (मरकुस : 7–27, 10:15, 9:50, 10:43, 11:25–26, थिस्लुनिकियों 5:19–23, गीता 12/1–20) * मन–मुख एक करके प्रार्थना करो। (रोमियों 15:6, गीता 12/8) * परमेश्वर के प्रति प्रार्थना, विश्वास, व्याकुलता, आत्मसंयमी आदि गुणों युक्त होना ही, सत्य धर्म है। * खाना–पीना, देश काल एवं परिस्थिति से उत्पन्न धर्म है, जहाँ जो चीजे सस्ते, सरल, सहज, सुपाच्य एवं रूचिकर रूप से मिलते हो, अभाव न हो, वहीं खाना–पीना धर्म है। (रोमियो, 14:17, 14:2–3, यथार्थ गीता पृष्ट–320–321, 17/8–10)

इस्लाम एवं भगवद्गीता में सम तत्व–

* सबको उस ओर (परमेश्वर) लौटना है। (कुरान 2:56, गीता 8:18) * परमेश्वर की लीला को देवताजन भी नहीं जानते। (कुरान 2:32, गीता 10:2) * आत्मा अमर है। (कुरान 2:34–36, 2:37–43, 7:10–28, गीता 10:2) * उपवास आवश्यक है। (कुरान 2:51, 2:68, गीता 2:68, 71) * परमेश्वर सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान एवं अनंत है। * नमाज (प्रार्थना) परमेश्वर की संजीवनी बुटी हैं। (कुरान 2:83 गीता 9:22, 8:14) * जकात (दान) स्वयं को उद्धार करने वाला है। (कुरान 2:83, 2:184–185, 2:215, 2:271–73, गीता 12:1–20) * जो जीवन के हर स्थिति में परमेश्वर का भक्त है, वह श्रेष्ठ है। (कुरान 2:157, 2:177, 3:195, गीता 12:1–20) * परमेश्वर के अलावा और कोई सत्य नहीं। (कुरान 2:163, गीता 9:25, 9:21) * परहेजगारी बनो (कुरान 2:183, 189 गीता 2:68, 71) * संसारिक धन भोग लिप्सायुक्त व्यक्ति शैतान है। (कुरान 2:212, गीता 16:4–24) * आसक्तिरहित हो जाओ। (कुरान 2:225, 3:134, 3:92 गीता 2:17) * निष्कामपूर्वक ईश्वर की भक्ति करो। (कुरान 2:262, गीता 12:1–20) * सर्वस्य दानी अल्लाह प्रिय है अर्थात सर्ववासना मुक्ति (कुरान 3:92, गीता 2:68, 71) * धर्मयुद्ध करने वाले स्वर्ग को प्राप्त होते है। (कुरान 4:95, 2:31–32) * ईश्वरपरायण, धर्मयुद्ध, नमाजी (प्रार्थना), जकाती, संतुष्ट, आत्म बलिदानी एवं परहेजगारी सच्चे भक्त है। (कुरान 8:2–3, गीता 12:4, 17:20) * परमेश्वर के अनुमति के बिना कुछ नहीं होता। (कुरान 10:3, गीता 18:61, 11:26–27) * हर समय परमेश्वर का नाम जप उद्धारक है। (कुरान 10:12, गीता 9:22) * दुष्ट, सनकी एवं अनीश्वरवादी से ईश्वर के बारे में उपदेश नहीं देना चाहिए। (कुरान 10:41, गीता 18:67) * सभी अपने कर्मो का फल भोगते है। (कुरान 10:44, गीता 18:61) * साधु पुरूष की रक्षा होगी एवं दुष्टों का विनाश होगा एवं नवीन धर्म स्थापना होगी। (कुरान 10:98, 10:103, 11:36–49, उत्पत्ति, 8:1–22, गीता 4:7–8) * काम, क्रोध एवं लोभ नरक के पंथ है। (कुरान 11:15, 15:88, 2:212, 219, 197, 7:56 गीता 7:21) * इन्द्रिय निग्रही अल्लाह प्रिय है। (कुरान 12:24, 2:183–189, गीता 2:68, 71) * अल्लाह चींटी के पग भी सुनता है। (कुरान 16:19, 18:49, गीता 13:13–14) * परमेश्वर तक पहुँचने के सीधे–टेढ़े और कई मार्ग है। (कुरान 16:9, गीता 4:11) * अल्लाह के गुण अनंत है, अनिर्वचनीय हैं, वह स्वयं ही स्वयं को जानता है। (कुरान 18:109, 31:27, निर्गमन 3:14 कुरान 14:34, 16:18, गीता 13:12–17, 10:2) * महापुरूष अल्लाह कृपा से पहचाने जा सकते है। (कुरान 18:65–86, गीता 4:34) * दीन–ए–इस्लाम में कोई जबरदस्ती नहीं। (कुरान 2:256, गीता 10:2) * अल्लाह स्वयं प्रकाश है– परमधाम है। (कुरान 24:35, गीता 11:12, 8:21) * परमेश्वर को अज्ञान माननेवाला 'असत' को प्राप्त करता है। (कुरान 24:40, गीता 17:28, 2:17) * ईश्वर के मार्ग में प्रिय से प्रिय वस्तु का त्याग करना होगा। (कुरान 37:102–112 गीता 2:68, 71) * परमेश्वर सब ओर है और सर्वव्यापक है। (कुरान 2:215, गीता 13:12–24) * संसार परिवर्तनशील है। (कुरान, 4:63–64, 16:101, गीता 11:12, 17/28, 2/17) * परमेश्वर हर जाति एवं सम्प्रदाय में अपना प्रिय भक्त भेजता है, अलग–अलग इबादत के तरीके बताता है, नये युग के अनुसार सचेत करना हैं, अतः झगड़ा न करो, भाईचारा अपनाओ। (कुरान, 13:17, 35:24, 22:67, गीता 4:11) * जैसी करनी, वैसी भरनी (गीता 18/16, कुरान 81:10, 36:54, 99:7–8) * परमात्मा में संशय आने पर भक्त परमार्थ से भ्रष्ट हो जाता है। (गीता 4:40, कुरान 2:163) * ईमानवाले (भक्त) नष्ट नहीं होते। (गीता 9/31, कुरानः10:98, 103, 11:36–49)